अमर उजाला

amarujala.com

बरेली

रविवार, 17 सितंबर 2017

PAGE NO. : 08 TOP

'बढ़ते अपराधों पर लगाम लगाने में फोरेंसिक साइंस है मददगार'

अमर उजाला ब्यूरो

बरेली।

एसआरएमएस में इंडियन कांग्रेस ऑफ फोरेंसिक मेडिसिन एंड टॉक्सीकोलॉजी की राष्ट्रीय कांफ्रेंस हुई

एसआरएमएस में हुई कांफ्रेंस में शामिल अतिथि।

श्री राम मूर्ति स्मारक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के फोरेंसिक मेडिसिन विभाग में इंडियन कांग्रेस ऑफ फोरेंसिक मेडिसिन एंड टॉक्सीकोलॉजी की राष्ट्रीय कांफ्रेंस हुई। इसमें विशेषज्ञों ने समाज में बच्चों, महिलाओं व उम्र दराज व्यक्तियों के साथ बढ़ते अपराधों व उनसे संबंधित चिकित्सकीय व कानूनी मुद्दों के बारे में जागरूकता फैलाने पर जोर दिया। कहा कि समाज में बढ़ते अपराध के ग्राफ को फोरेंसिक साइंस की मदद से कम किया जा सकता है। फोरेंसिक मेडिसिन और प्रशासनिक अधिकारियों को मिलकर कार्य करना होगा।

आईसीएफएमटी के संरक्षक और फोरेंसिक एक्सपर्ट डॉ. टीडी डोंगरा (इन्होंने भूतपूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का पोस्टमार्टम भी किया था) ने बताया कि फोरेंसिक साइंस की मदद से अपराधों पर लगाम लगाई जा सकती है। रुहेलखंड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अनिल कुमार शुक्ला ने कहा कि अपराध रोकने में कानूनी जानकारी के लिए जागरूकता जरूरी है। संस्थान के चेयरमैन देव मूर्ति ने कहा कि नवीन चिकित्सकों एवं पीजी छात्रों पर चिकित्सा जगत में हो रही नवीन खोजों, अनुसंधानों व कानूनी बारीकियों की जानकारी देने पर जोर दिया जाता है। यूसीएमएस नई दिल्ली से आए डॉ. एसके वर्मा ने फोरेंसिक विशेषज्ञों की भूमिका पर विस्तार से बात रखी और अपराधों के एविडेंस तक पहुंचने के लिए फोरेंसिक जांच के महत्व को भी बताया। एम्स से आए डॉ. ओपी मूर्ति ने महिला अपराध में फोरेंसिक एक्सपर्ट की भूमिका के बारे में बताया। संस्थान के प्रशासनिक निदेशक आदित्य मूर्ति ने कांफ्रेंस में आए अतिथियों का आभार व्यक्त किया। रुहेलखंड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अनिल कुमार शुक्ला और डॉ. एसके वर्मा को लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड से भी सम्मानित किया गया। डॉ. दलवीर सिंह, डॉ. चंद्र प्रकाश भैसोरा, सीबीआई फोरेंसिक लैब के पूर्व निदेशक डॉ. राजेंद्र सिंह दांगी ने भी विचार रखे।

'केस हल करने के बजाए और उलझा देती है पुलिस'

अमर उजाला ब्यूरो

बरेली।

डॉ. राजेंद्र सिंह

सुबूतों के अभाव में कई बार गुनहगार बच निकलते हैं और बेगुनाह फंस जाते हैं। अगर घटना के तथ्यों को वैज्ञानिक कसौटी पर कसा जाए तो ज्यादातर केस पुलिस के स्तर पर ही हल हो सकते हैं और सीबीआई की जरूरत नहीं पड़ेगी, लेकिन पुलिस की जांच में केस अक्सर हल कम और उलझ ज्यादा जाते हैं। सीबीआई इन केसों की जांच करती है तो फोरेंसिक साइंस की मदद से सबूत मिल जाते हैं और दोषी भी पकड़ में आ जाते हैं। सीबीआई फोरेंसिक लैब के पूर्व निदेशक डॉ. राजेंद्र सिंह दांगी ने फोरेंसिक साइंस के महत्व और फोरेंसिक जांच के तरीके के बारे में बताते हुए पुलिस की जांच की कलई भी खोलकर रख दी। वह शनिवार को श्री राममूर्ति स्मारक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस में 'इंडियन कांग्रेस ऑफ फोरेंसिक मेडिसिन एंड टॉक्सीकोलॉजी' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कांफ्रेंस में हिस्सा लेने आए थे।

पुलिस की जांच के तौर-तरीकों पर सीबीआई फोरेंसिक लैब के पूर्व निदेशक डॉ. राजेंद्र सिंह ने उठाए सवाल

बदायूं में दो बहनों की मौत, आरुषि मर्डर केस और जेसिका लाल हत्याकांड की जांच में सीबीआई की फोरेंसिक टीम में शामिल रहे डॉ. दांगी कहते हैं कि घटना के तमाम ऐसे सुबूत होते हैं जिनको फोरेंसिक जांच से ही जुटाया जा सकता है लेकिन पुलिस सिर्फ प्रत्यक्ष सुबूतों पर ही गौर करती है। उन्होंने केरल में पुलिस की पिटाई से हुई एक व्यक्ति की मौत की जांच का उदाहरण देते हुए बताया कि एक अपराधी को पुलिस ने उल्टा लटका कर पीटा। उसकी मौत हो गई। बाद में मामला सीबीआई को सौंपा गया तो उन्होंने उस कमरे की जांच की जहां उसकी पिटाई हुई थी। पुलिस के सुबूत मिटाने के बावजूद फोरेंसिक जांच में खून के कण, कुंडे पर जंजीर के निशान समेत कई सुबूत मिले और डीएनए प्रोफाइल से सच्चाई सामने आई। पुलिस में इंस्पेक्टर स्तर की पोस्ट पर फोरेंसिक साइंस की नॉलेज जरूर दी जानी चाहिए।

सुबूत कभी नहीं मिटते

डिपार्टमेंट ऑफ फोरेंसिक मेडिसिन एंड टॉक्सीकोलॉजी यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ साइंसेज एंड जीटीबी हॉस्पिटल नई दिल्ली के प्रोफेसर सतीश के वर्मा ने बताया कि घटना स्थल पर सुबूत कभी नहीं मिटते हैं। जरूरत बस वैज्ञानिक तरीके से खोजबीन की होती है। कहा, पुलिस जांच में अनजाने में कई तैयों को खुद ही नष्ट कर देती है। उसे पता ही नहीं होता कि एक सूक्ष्म तैय भी बड़ा सुबूत हो सकता है। इन सब बातों को समझना बेहद जरूरी है।

फोटोग्राफी से ही 90 फीसदी केस हल हो जाएंगे

डॉ. राजेंद्र सिंह दांगी और प्रोफेसर सतीश के वर्मा का मानना है कि अगर मौका-ए-वारदात पर जांच की फोटोग्राफी हो तो 90 फीसदी केस हल हो सकते है। लंबी जांच की जरूरत ही नहीं। घटना के कई सुबूत ऐसे होते हैं जो चहलकदमी से खत्म हो जाते हैं। अगर आपने किसी ग्लास या किसी चीज को छुआ है तो कई सालों तक आपकी अंगुलियों के निशान उस पर मौजूद रहेंगे। इससे जांच-पड़ताल में काफी मदद मिली है।

फोरेंसिक साइंस में अवसरों की कमी नहीं

पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के शव का पोस्टमार्टम करने वाले फोरेंसिक एक्सपर्ट और आईसीएफएमटी के संरक्षक डॉ. टीडी डोंगरा ने कहा कि फोरेंसिक साइंस के क्षेत्र में रोजगार के अवसरों की कमी नहीं है। डॉ. सतीश ने बताया कि जल्द नेट की तर्ज पर एक ऑल इंडिया टेस्ट आयोजित करने की तैयारी है। इसे क्वालीफाई करने वाले अभ्यर्थियों को प्रदेशों में नियुक्ति दी जाएगी। हर प्रदेश में फोरेंसिक एक्सपर्ट की जरूरत है।

यूपी पुलिस पड़ताल में कमजोर

एक सवाल के जवाब में वैज्ञानिकों ने कहा कि दक्षिण के प्रदेशों की पुलिस से जब केस सीबीआई के पास आते हैं तो काफी मजबूत सबूत भी सौंपे जाते हैं। मगर यूपी की बात करें तो यहां की पुलिस काफी रफ डाटा सीबीआई को देती है। बदायूं कांड में भी यही हुआ था।